ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

विषय: - सर्वसिद्धिप्रदः कुम्भः

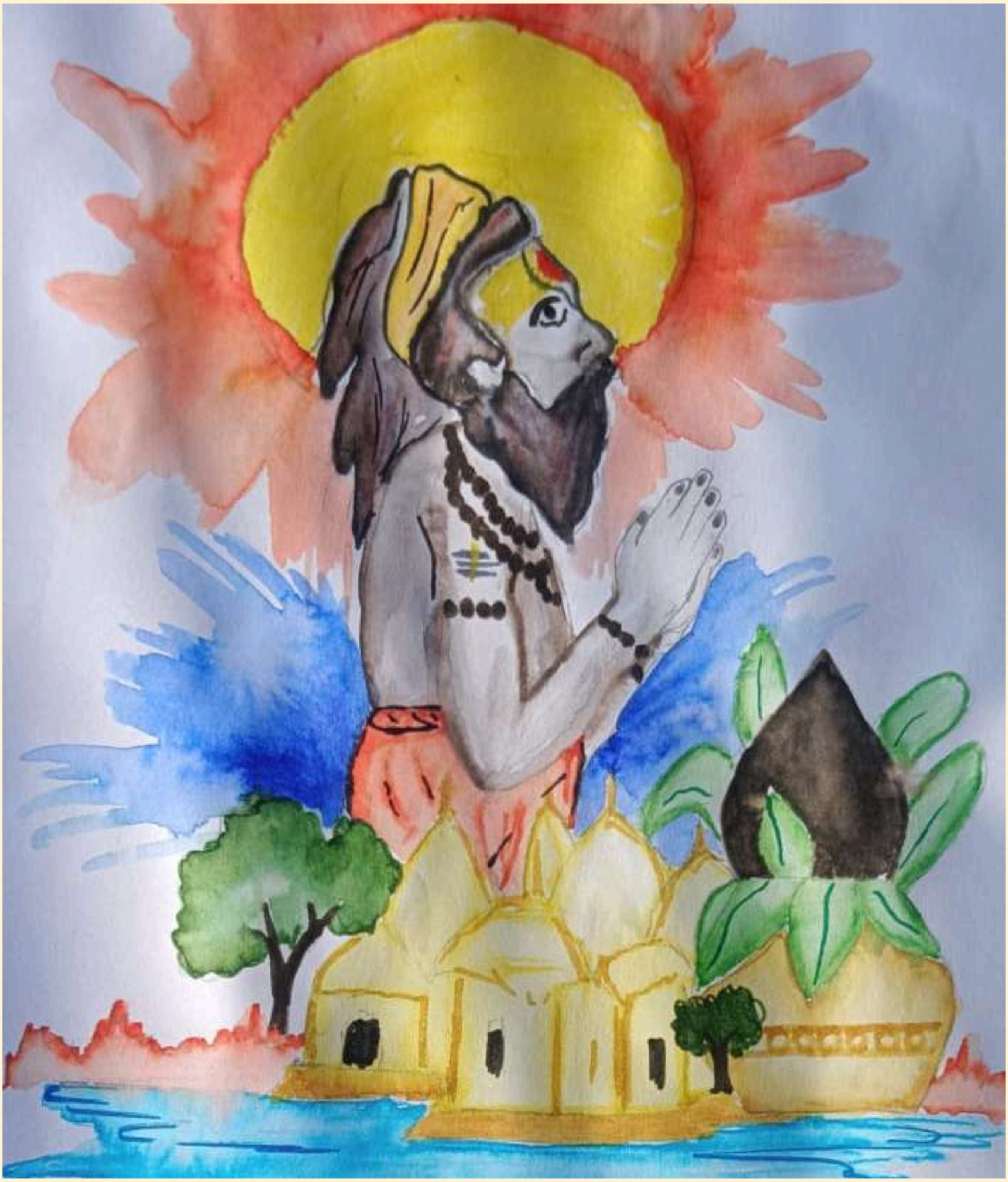

– पलक्षा, ८ अ

गंङ्गाद्वारे प्रयागे च धारा – गोदावरी– तटे ।
कलशाख्यो हि योगोऽयं प्रोच्यते शङ्करादिभिः ।।

अर्थात् हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक - शंकरादि देवगणों ने कुम्भ योग कहा है।

अंक ५७ फरवरी २०२५ माघ मास , विक्रम संवत् २०८१
मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयासः

आत्मानं विद्धि

" सर्वजन- हिताय सर्वजन- सुखाय महाकुम्भ: "

अथ स्वागतमागच्छन्तु भारतवर्षस्याध्यात्मिकं जागरणं महाकुम्भे जायमानमस्ति। सर्वे जानन्ति यत् भारतीय- ज्ञानपरम्परायां सप्तसिन्धो: अस्तित्वं विद्यमानं विद्यते। यत्र प्रमुखतम: समुद्रक्षीरसागर: वर्तते। अस्य क्षीरसागरस्य रुचिकरा: कथा: पुराणेषु विद्यन्ते। देवा: दैत्याश्च परस्परं मिलित्वा अमृतस्य अन्वेषणे अस्य रहस्यमयस्य क्षीरसागरस्य मन्थनं कृत्वा चतुर्दशरत्नै: सह अमृतकलशं प्राप्नुवन्। धर्मग्रन्थे विष्णुयागे "कलशोत्पत्ति " कथाया: सम्पूर्ण: अध्याय: वर्तते। अत्र सम्यक् समुद्रमंथनस्य गाथा: अमृतकलशस्य चर्चाश्च पाठका: पठितुं शक्नुवन्ति। कुम्भपर्वण: इतिहास: प्रमुखतया स्कन्दपुराणे प्राप्यते। वैदिक- साहित्ये कुम्भशब्दस्य प्रयोग: कलशाय अभवत्। अथर्ववेदस्य कालसूक्ते पूर्ण कुम्भस्य समुलेखोऽस्ति। तत्र कथितं यदेष: कुम्भ: अनेकप्रकारेण भवति। अयं कुम्भ: कालरूप:। अन्यस्मिन् मन्त्रे उक्तं यदयं त्रिलोकपालनकर्ता विद्यते। अयमखिलं जगत् व्याप्नोति। नास्ति एतस्मादधिकं किञ्चित्तेज:। अनेन मंत्रेण ज्ञायते यत् संसारे व्याप्तं कालचक्रमेव पूर्णकुम्भोऽस्ति। अतएव पूर्णकुम्भस्य समय: द्वादशवर्षीय: निर्धार्यते। वस्तुत: इदं कालचक्रमेव संसारं पालयति। यथा अथर्ववेदे उक्तम् -

पूर्ण: कुम्भोऽधिकाल: अहितस्त्वं वै पश्यामो बहुधानु सन्त:।
स इमा विश्वा भुवनानि प्रत्यङ्कालं तमाहु: परमे व्योमन् ।।

एष: महाकुम्भ: भारतीय- इतिहासस्य, ज्ञानपरम्पराया:, संस्कृते:, आध्यात्मिकताया:, सामाजिक- समरसताया:,सांस्कृतिक- एकताया:, विश्वबन्धुत्वस्य च संवाहक: विद्यते। महाकुम्भ: सनातनधर्मस्य भारतीय-संस्कृते: अत्यन्तं प्राचीना परम्परा वर्तते। महाकुम्भस्य पर्व ज्ञानस्य, वैराग्यस्य,भक्ते:, मोक्षकामनायाश्च महान् समारोह: विद्यते। अत्रआबालयुवावृद्धगृहस्थवैरागीसन्यासीतपस्वीज्ञानीयाज्ञकानां समुदाय: समवेतरूपेण उपस्थितिं प्रदाय शोभां वर्धयति गौरवं च अनुभवति। अस्य समारोहस्य मूलं मन्त्रं - "वसुधैव कुटुम्बकम् " "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय " "यत्र विश्वं भवति एकनीडम्" "सर्वे भवन्तु सुखिन: " अथच "अतिथिदेवो भव " विद्यते।

सर्वे जानन्ति यत् भारतीय- परम्परायां कलशस्य सम्बन्ध: अमृतकलशेन वर्तते। पुराणेषु सविस्तरं कथानकं कुम्भपर्वण: समुपलभ्यते। यदा सूर्य: वृषराशौ बृहस्पतिश्च मकरराशौ प्रविशति तदा प्रयागे गंगायमुनासरस्वतीसंगमे कुम्भपर्व भवति।

गंङ्गाद्वारे प्रयागे च धारा - गोदावरीतटे। कलशाख्यो हि योगोऽयं प्रोच्यते शङ्करादिभि: ।।
मेषराशिगते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ। अमावस्यां तदा योग: कुम्भाख्यस्तीर्थ- नायके ।।

कुम्भकलस्य सम्बन्ध: अमृतकलशेन वर्तते। कुम्भशब्दस्य अर्थ: भवति- "कु कुत्सितम् उम्भयति दूरयति जगत् हितायेति वा कुम्भ:" "कुं पृथिवीं उम्भयति पूरयति मङ्गल-सम्मानादिभिरिति कुम्भ:" कुं पृथिवीं भावयति दीपयति तेजोवर्धनेनेति वा कुम्भ:"

कला: कला हि देवानां, दानवानां कला: कला: ।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् , कलशस्तेन कथ्यते ।।

कलशस्य विषये अस्माभि: बहुधा पूजा-पाठसमये आचार्याणां मुखात् श्रुतं यत् -

कलशस्य मुखे विष्णु: कण्ठे रुद्र: समाश्रित:। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणा: स्मृता: ।।
कुक्षौ तु सागरा: सर्वे, सप्तदीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदो सामवेदो ह्यथर्वण: ।।
अङ्गैश्च सहिता: सर्वे कलशं तु समाश्रिता:।

कुम्भपर्वण: कथानकं सविस्तरं पुराणग्रन्थेषु समुपलभ्यते। श्रीमद्भागवतपुराणानुसारं भगवत: विष्णोराज्ञया देवदानवयोर्मध्ये पारस्परिकसन्धे: पश्चात् समुद्रमन्थनं जातं तत्र मन्दराचलपर्वत: मन्थानरूपेणासीत् वासुकी सर्पश्च रज्जुरूपेण आसीत्। यथा प्रतिपादितम् श्रीनरसिंहपुराणे -

गत्वा तत्र सुरा: सर्वे, सन्धि: कुरुत दानवै: । मन्थानं मन्दरं कृत्वा, नेत्रं कृत्वा च वासुकिम् ।।
अथ च श्रीमद्भागवतमहापुराणे -
ततस्ते मन्दरगिरिमोज सोत्पाट्य दुर्मदा: । ननन्द उपधिं निन्यु: शक्ता: परिघबाहव: ।।
किंच श्रीमद्भागवतमहापुराणेऽव उक्तम् -
ते नागराज मामन्त्र्य फलभागेन वासुकिम् । परिवीय गिरौ तस्मिन् नेत्रमब्धिं मुदान्विता: ।।

शास्त्रानुसारं समुद्रमंथनेन चतुर्दश- रत्नानां प्राप्तिर्जाता। तानि रत्नानि देवदानवै: परस्परं विभक्तानि। यदा च धन्वन्तरि: अमृतकलशं स्वीकृत्य निरगच्छत् तदा देवदानवयो: युद्धस्थिति: समुत्पन्ना। भगवत: विष्णो: आज्ञया अमृतकलशस्य रक्षाया: दायित्वम् इन्द्रात्मजाय जयन्ताय प्रदत्तम्। जयन्त: अमृतकलशं स्वीकृत्य धावितवान्। धावनसमये अमृतस्य बिन्दव: पृथिव्यां हरिद्वारे , प्रयागे, नासिके, उज्जैनेत्यादिषु चतुर्षु स्थलेषु पतिता:। जयन्त: द्वादशदिवसेषु अमृतकलशं स्वर्गं प्रत्यानीतवान्। स्वर्गस्य एकदिनं पृथिव्या: एकवर्षतुल्यं भवति। द्वादशदिनानि च द्वादशवर्षतुल्यानि भवन्ति। तस्मादेव द्वादशवर्षेषु महाकुम्भस्य वैश्विकमायोजनं भवति। यद्यपि हरिद्वारे, प्रयागे, उज्जैन्यां, नासिके च यथासमयं कुम्भपर्वण: महान् सम्मर्द:,भक्तिभाव: दृश्यते तथापि तीर्थराज- प्रयागस्य कुम्भपर्वण: महत्त्वं पृथक् श्रेष्ठं च तपस्विन: मन्यन्ते। यथा स्कन्दपुराणे उक्तम् -

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नान शतानि च। वैशाखे नर्मदाकोटि: कुम्भस्नानेन तत्फलम् ।।
विष्णुपुराणेऽपि कुम्भविषये प्रोक्तम् -
अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमे: कुम्भस्नानेन तत्फलम् ।।

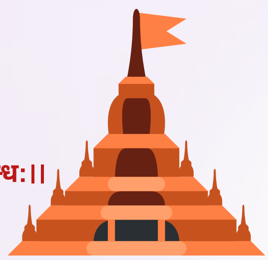

कुम्भपर्वण: सनातन- परम्परां ध्याने संस्थाप्य महाकवि कालिदासेन प्रयागे संगमे स्नानस्य महत्त्वं श्लोके प्रदर्शितम् -

समुद्रपत्न्योर्जलसन्निपाते पूतात्मनामत्र किलाभिषेकात् । तत्त्ववावबोधेन विनापि भूयस्तनुत्यजां नास्ति शरीरबन्ध:।।
आचार्य- चाणक्य: स्वीये नीतिशास्त्रे लिखति-
साधूनां दर्शनं पुण्यं, तीर्थभूता हि साधना। तीर्थं फलति कालेन सद्य: साधुसमागम: ।।

आगच्छन्तु सर्वे मिलन्तु पश्यन्तु अनुभवं च कुर्वन्तु दिव्यं भव्यं पौराणिकस्य महाकुम्भस्य आधुनिकिकरणं गङ्गायमुनासरस्वत्या: पवित्रे तटे तीर्थराजप्रयागे महाकुम्भे यत्र सौविध्येन भविष्यति साधूनां दर्शनं, संगमस्नानं, पुण्यफलप्राप्तिश्च। महाकुम्भस्य सुविशाले समारोहे लोका: समस्ता: सुखिनो भवन्तु इति कामये।

- डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

सूक्तिमालिका

नैतिक शिक्षा तथा जीवनमूल्यों की शास्त्रीय बातें

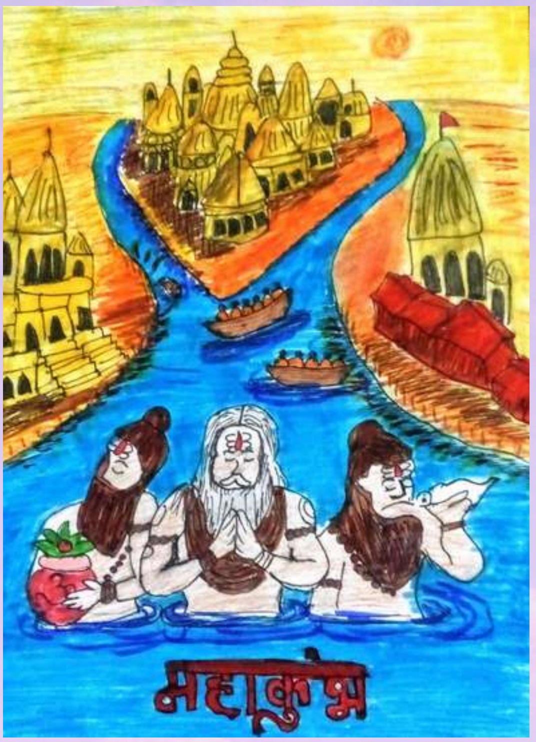

समृद्धि शर्मा ७ ब

१. गीता सुगीता कर्तव्या - श्रीमद्भवद्गीता
गीता सुगीता करने योग्य है।

२ . क्लैब्यं मा स्म गम: पार्थ - गीता हे अर्जुन ! (कर्म क्षेत्र में) नपुंसकता को मत प्राप्त हो।

३. अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयम् - गीता यह आत्मा अव्यक्त है, यह आत्मा अचिन्त्य है।

४. कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन - गीता
कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, उसके फलों में कभी नहीं।

५. क्रोधाद्भवति सम्मोह: - गीता
क्रोध से अत्यंत मूढ़भाव उत्पन्न हो जाता है।

६ प्रसादे सर्वदु:खानां हानिरस्योपजायते - गीता
अन्त: करण की प्रसन्नता होनेपर इसके सम्पूर्ण दु:खों का अभाव हो जाता है।

७. नियतं कुरु कर्म त्वम् - गीता तुम नित्य शास्त्रविहित कर्तव्य कर्म करो।

८. यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जन: - गीता
श्रेष्ठ पुरुष जो आचरण करते हैं, अन्य पुरुष भी वैसा ही आचरण करते हैं।

९. ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् - गीता हे अर्जुन ! जो भक्त मुझे जिस प्रकार भजते हैं, मैं भी उनको उसी प्रकार भजता हूँ।

१०. न मां कर्माणि लिम्पन्ति - गीता
कर्मों के फल में मेरी स्पृहा नहीं है।

नैतिक शिक्षा - श्लोक:

चन्दनं शीतलं लोके , चन्दनादपि चन्द्रमा: ।
चन्द्रचन्दनयोर्मध्ये शीतला साधुसंगति: ॥

अर्थात् - चन्दन को संसार में सबसे शीतल लेप माना गया है, लेकिन कहते हैं चंद्रमा उससे भी ज्यादा शीतलता देता है, लेकिन इन सबके अलावा अच्छे मित्रों का साथ सबसे अधिक शीतलता एवं शांति प्रदान करने वाला होता है।

न हि दीपान्तरापेक्षा यद्वद्दीपप्रकाशने।
बोधस्यात्मस्वरुपत्वात् बोधोऽन्यस्तथेष्यते। ।

अर्थात् - जिस प्रकार दीपक को प्रकाशित करने के लिए किसी अन्य दीपक की अपेक्षा नहीं होती, उसी प्रकार आत्म-स्वरूप का बोध होने के कारण किसी अन्य बोध की अपेक्षा नहीं होती।

सत्यं नास्ति तपो नास्ति नास्ति चेन्द्रियसंयम: ।
सर्वभूतदया नास्ति एतच्चाण्डाललक्षणम्। ।
(अवदानशतक – २०६)

अर्थात् - जिसमें न तो सत्य हो, न ही तप हो एवं उसकी इन्द्रियां भी उसके वश में न हों, साथ ही सभी प्राणियों के प्रति उसमें दयाभाव भी न हो वह चाण्डाल कहा जाता है।

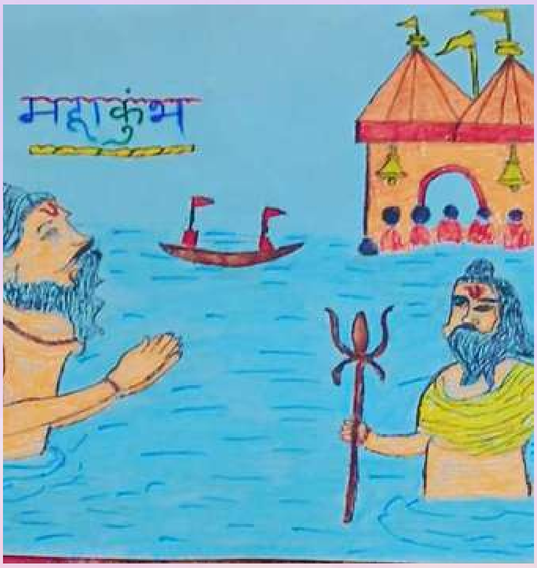

- दिव्यांश ७अ

- कृतिका गुसाईं ६ब

मधुरं संस्कृतम् / वदतु संस्कृतम् - १६

१. अमृती = इमरती
२. कलाकन्द: = कलाकन्द
३. पायसम् = खीर
४. घृतपूर: = घेवर
५. कुण्डली = जलेबी
६. पिण्ड: = पेड़ा
७. मधुमण्ठ: = बालू शाही
८. मिष्ठान्नम् = मिठाई
९. रसगोल: = रसगुल्ला
१०. मोदकम् = लड्डू

अध्यात्म का महासागर महाकुम्भ...

सृष्टि शर्मा, ७ ब

कुंभ मेला भारत का एक प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जो हर बारह वर्ष में आयोजित किया जाता है। यह मेला सनातन धर्म के सबसे पवित्र त्योहारों में से एक है, जिसमें लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। कुंभ मेला का आयोजन प्राचीन काल से होता आ रहा है, जब भगवान विष्णु ने समुद्र मंथन के दौरान अमृत कलश को धरती पर गिरा दिया था। इस कलश के गिरने से चार स्थानों पर अमृत बूंदें गिरीं, जो आज कुंभ मेला के आयोजन स्थल हैं - प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नाशिक। कुंभ मेला में श्रद्धालु स्नान, पूजा-पाठ, और ध्यान के लिए आते हैं। यह मेला सनातन धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों और साधुओं के लिए एक महत्वपूर्ण आयोजन है, जिसमें वे अपने गुरुओं के साथ मिलकर धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं।

कुंभ मेला का आयोजन एक विशाल और जटिल प्रक्रिया है, जिसमें सरकार, प्रशासन, और स्थानीय समुदाय के लोग मिलकर काम करते हैं। यह मेला न केवल एक धार्मिक आयोजन है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और आर्थिक आयोजन भी है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। कुंभ मेला का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि यह एक सामाजिक और सांस्कृतिक आयोजन भी है। यह मेला लोगों को एक साथ लाता है, जो अपने मतभेदों को भूलकर एक दूसरे के साथ मिलकर धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेते हैं। यह आयोजन अध्यात्म का महासागर है। यह कुम्भ सर्वजन हिताय और सर्वजन सुखाय के लिए है। यह ऐतिहासिक और हमारी सांस्कृतिक विरासत है।

- नयना खाती, ९ अ

अध्यात्म आस्था और बन्धुत्व का प्रतीक महाकुम्भ...

दिव्यांशी कलूनी, तृतीय

कुम्भ हजारों वर्षों से भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहा है। हजारों वर्षों से लोग यहाँ पर डुबकी लगाने आते हैं। कुम्भ के पीछे एक पौराणिक कथा है। जब समुद्र मंथन हो रहा था तब समुद्र से १४ रत्न निकले जिनमें से एक अमृत भी था। जब अमृत निकला तो अमृत पीने के लिए देवता और असुरों में युद्ध छिड़ गया। वह युद्ध १२ दिनों तक चला और उस युद्ध में अमृत की बूंदे चार जगह पर गिरी। नासिक , उज्जैन , हरिद्वार और प्रयागराज। देवताओं के १२ दिन मनुष्यों के १२ साल के बराबर होते हैं , इसलिए पूर्ण कुंभ हर १२ साल पर होता है।

कुंभ तीन प्रकार के होते हैं , अर्ध कुंभ जो हर ६ साल पर होता है, पूर्ण कुंभ हर १२ साल पर इन चार जगहों में से किसी एक में होता है। जब चार पूर्ण कुंभ पूरे हो जाते हैं तब महाकुंभ होता है। जो १४४ साल बाद होता है। २०२५ में महाकुंभ प्रयागराज में मनाया जा रहा है यहाँ पर तीन सबसे पवित्र नदियों का संगम होता है, गंगा यमुना और सरस्वती परंतु आज के समय केवल गंगा और यमुना ही प्रयागराज में आकर मिलती है क्योंकि सरस्वती गणेश जी के श्राप के कारण सुख गई लेकिन कुछ लोगों का मानना है कि वह अभी भी जमीन के अंदर बहती है और प्रयागराज में आकर गंगा और यमुना के साथ मिल जाती है।

- आयुष वर्मा, ८ अ

समरसता का महासम्मेलन कुम्भ...

अथ श्री महाकुम्भ कथा

पौराणिक कथा के अनुसार, जब देवताओं और असुरों के बीच समुद्र मंथन हुआ था तब समुद्र मंथन के दौरान भगवान धन्वंतरि अमृत कुंभ यानी कलश लेकर प्रकट हुए। देवताओं के संकेत पर इंद्र पुत्र जयंत अमृत से भरा कलश लेकर भागने लगे और असुर जयंत के पीछे भागने लगे। अमृत कलश की प्राप्ति के लिए देवताओं और दैत्यों के बीच बारह दिन तक भयंकर युद्ध हुआ। माना जाता है कि देवताओं का एक दिन मनुष्य के बारह वर्षों के बराबर होता है। इस युद्ध के दौरान जिन-जिन स्थानों पर कलश से अमृत की बूंदे गिरी थी वहां कुंभ मेला लगता है। अमृत की बूंदे इन चार जगहों पर गिरी थी प्रयागराज, हरिद्वार , उज्जैन और नासिक। इन चारों स्थानों को पवित्र माना गया और इन जगहों पर कुंभ मेले का आयोजन किया जाने लगा। प्रयागराज और हरिद्वार में हर छह साल में भी अर्ध-कुंभ का आयोजन होता है।

बारह वर्ष के बाद होने वाले इस उत्सव को पूर्ण कुंभ या महाकुंभ कहा जाता है।

आप सब का भारतीय महाकुम्भ में दिव्य और भव्य स्वागत है।

- अदिति शाह ८अ

अमृतपान का समय होता है महाकुम्भ...

आरव कुमार - ७ ब

महाकुंभ विश्व का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण धार्मिक मेला है। यह पवित्र भारत भूमि पर प्रत्येक बारह वर्षों के अंतराल पर लगता है। यह मेला भारत के चार पवित्र स्थानों हरिद्वार, प्रयागराज, नासिक और उज्जैन में आयोजित किया जाता है। महाकुंभ में लाखों श्रद्धालु भाग लेते हैं। महाकुंभ का धार्मिक महत्व बहुत गहरा है। महाकुंभ का आयोजन ज्योतिषीय गणनाओं के आधार पर किया जाता है। जब गुरु ग्रह और चंद्रमा मेष राशि में होते हैं तब महाकुंभ का आयोजन किया जाता है। यहाँ बहुत बड़ा आयोजन होता है। इसमें लाखों तंबू लगाए जाते हैं। मेले लगते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। महाकुंभ में श्रद्धालु पवित्र नदियों में स्नान करते हैं। साधु संतों से आशीर्वाद लेते हैं और धार्मिक अनुष्ठान करते हैं। महाकुंभ धर्म और भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह एक ऐसा आयोजन है जो लाखों लोगों को एक साथ लाता है और उन्हें आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। महाकुंभ का महत्व केवल भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व के लिए है। यहाँ पवित्र गंगा यमुना और गुप्त सरस्वती का महान संगम है। एक बार सब को प्रयागराज जाना चाहिए और महाकुम्भ में शामिल होकर संगम में डुबकी अवश्य लगानी चाहिए।

- शमिष्ठा भट्ट कक्षा - चतुर्थ

साधना मोक्ष के साथ प्रेरणा का महाद्वार कुम्भ...

सदियों से भारत में कुंभ मेले का विशेष धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। यह पर्व करोड़ों श्रद्धालुओं को आध्यात्मिक ऊर्जा प्रदान करता है और सनातन संस्कृति की महानता को दर्शाता है। मान्यता है कि करोड़ों वर्ष पूर्व देवताओं और दानवों के बीच समुद्र मंथन के दौरान जो अमृत कुंभ निकला था, उस अमृत की कुछ बूंदें पृथ्वी पर गिर गई थीं। इन्हीं स्थानों पर हर १२ वर्ष में कुंभ मेले का आयोजन होता है। प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक ये चार प्रमुख स्थान हैं, जहाँ कुंभ का आयोजन किया जाता है। वर्ष २०२५ में यह महापर्व प्रयागराज में १३ जनवरी से २६ फरवरी तक आयोजित हो रहा है। कई पौराणिक कथाओं में महाकुंभ का वर्णन मिलता है। महाकुंभ में कल्पवास का भी विशेष महत्व है। जिसमें श्रद्धालु विशेष रूप से गंगा और यमुना के संगम तट पर एक माह तक प्रवास करते हैं। यह व्रत माघ माह में आरंभ होता है, इसमें कुछ नियमों का पालन करना होता है और श्रद्धालुओं को अपनी इच्छाओं और इंद्रियों पर कड़ा नियंत्रण रखना होता है।

मान्यता है कि महाकुंभ में त्रिवेणी घाट पर स्नान करने से जीवन के समस्त पापों से मुक्ति मिलती है। साथ ही शरीर और आत्मा दोनों शुद्ध हो जाते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार कुंभ का संबंध समुद्र मंथन से है। इस बार महाकुंभ का अद्भुत संयोग करीब १४४ साल बाद बना है , यह कुल ५५ दिनों के लिए था, इस दौरान प्रयागराज सर्वाधिक लोकसंख्या वाला शहर बन जाता है। **- श्रेया नगरकोटी, ७ अ**

भारतीय संस्कृति के जनजागरण का महापर्व कुम्भ...

पौराणिक कथाओं के अनुसार जब देवता और असुरों ने समुद्र मंथन किया था जिससे अमृत कलश निकला था। अमृत पाने के लिए देवताओं और असुरों के बीच युद्ध छिड़ गया था। इस अमृत को असुरों से बचाने के लिए देवता भागे और भागते समय अमृत की कुछ बूंदें चार स्थानों पर हरिद्वार , प्रयागराज , उज्जैन और नासिक में गिरी थी। इन चार जगहों पर ही कुंभ मेले का आयोजन किया जाता है , जो भारतीय संस्कृति के जनजागरण का महापर्व माना जाता है। माना जाता है कि देवताओं का एक दिन मनुष्य के १२ साल के बराबर होता है इसलिए कुंभ मेला हर १२ साल में आयोजित किया जाता है, कुंभ मेला आस्था का प्रतीक है। कुंभ शब्द संस्कृत भाषा से लिया गया है जिसका अर्थ घड़ा या बर्तन होता है माना जाता है कि कुंभ से १४ रत्न निकले थे जिसके नाम इस प्रकार हैं -

ऐरावत हाथी , कामधेनु गाय , उच्चै:श्रवा घोड़ा , कौस्तुभ मणि , कल्पवृक्ष , रंभा अप्सरा , महालक्ष्मी , पद्मराग मणि , हलाहल विष , चंद्रमा , शारंग धनुष , शंख , धन्वन्तरि , अमृत आदि इन सभी रत्नों को प्राप्त करने के लिए आज भी दूर - दूर से सन्त, संन्यासी, बाबा, नागा साधु कुंभ मेले में आते हैं। जिस किसी के भाग्य में ये रत्न होते हैं उसी को मिलते हैं। सच में भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण महापर्व है महाकुंभ।

- खुशी सिंह, चतुर्थ

" माघ मकरगति रवि जब होई, तीरथपति आव सब कोई " - गोस्वामी तुलसीदास

सहस्रं कार्तिके स्नानं माघे स्नानशतानि च ।
वैशाखे नर्मदा कोटि: कुम्भस्नानेन तत्फलम् ।।

अर्थात् कार्तिक महीने में १००० बार गंगा में स्नान करने से, माघ में १०० बार गंगा में स्नान करने से और वैशाख में करोड़ बार नर्मदा में स्नान करने से जो फल होता है, वह प्रयाग में कुंभ पर्व पर केवल एक ही बार स्नान करने से प्राप्त होता है ।

जैसा कि आप सब जानते हैं महाकुंभ २०२५ का आयोजन प्रयागराज में हो रहा है, जो विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक मेला माना जाता है। यह हर १२ वर्षों में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम तट पर आयोजित होता है। इस मेले में करोड़ों श्रद्धालु संगम में स्नान कर मोक्ष की कामना करते हैं। मान्यता है कि महाकुंभ के दौरान यहाँ स्नान करने से पापों से मुक्ति मिलती है और आत्मा शुद्ध होती है। पौराणिक कथा के अनुसार, समुद्र मंथन के दौरान अमृत कलश से कुछ बूंदें प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक में गिरी थीं, इसलिए इन स्थानों पर कुंभ मेले का आयोजन होता है। महाकुंभ में देश-विदेश के संत, महात्मा, नागा साधु और श्रद्धालु भाग लेते हैं। यह आयोजन न केवल आध्यात्मिक बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। महाकुंभ २०२५ के लिए प्रशासन व्यापक तैयारियाँ कर रहा है। श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए सुरक्षा, परिवहन, स्वच्छता और स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर बनाया जा रहा है। आधुनिक तकनीकों के माध्यम से भीड़ नियंत्रण और यातायात प्रबंधन किया जाएगा। यह मेला केवल आस्था का प्रतीक नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, परंपराओं और आध्यात्मिकता का भव्य संगम है, जो संपूर्ण विश्व के लोगों को आकर्षित करता है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि - **अश्वमेधासहस्राणि वाजपेयशतानि च।**
लक्षं प्रदक्षिणा भूमे: कुम्भस्नानेन तत्फलम् ।।

अर्थात् हजार अश्वमेध- यज्ञ करने से, १०० वाजपेय यज्ञ करने से और लाख बार पृथ्वी की प्रदक्षिणा करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल केवल प्रयाग के कुंभ के स्नान से प्राप्त होता है।

- कलिका त्रिवेदी ९अ

भारत का सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन है प्रयागराज का महाकुम्भ...

मेषे राशिं गते जीवे मकरे चन्द्रभास्करौ ।
अमावस्या तदा योग: कुम्भाख्यस्तीर्थनायके ।।

अर्थात् जिस समय बृहस्पति मेष राशि पर स्थित हों तथा चंद्रमा और सूर्य मकर राशि पर हों तो उस समय तीर्थराज प्रयाग में कुंभ योग होता है। प्रयाग में भी कुंभ के तीन स्नान होते हैं, प्रथम स्नान मकर संक्रांति को, द्वितीय एवं मुख्य स्नान माघ कृष्ण मौनी अमावस्या पर, तृतीय स्नान माघ शुक्ल वसंत पंचमी को होता है।

कुंभ का मेला भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो हमारी समृद्ध संस्कृति, हमारी गहरी धार्मिक परंपराओं, और हमारी एकता और सामाजिक सौहार्द का प्रतीक है। यह मेला हर १२ वर्ष में आयोजित किया जाता है और इसमें देश-विदेश से लाखों श्रद्धालु और पर्यटक भाग लेते हैं, जो इस अवसर को एक अद्वितीय और अविस्मरणीय अनुभव युक्त बनाते हैं। कुंभ मेले का महत्व न केवल धार्मिक है, बल्कि यह एक सांस्कृतिक और सामाजिक आयोजन भी है, जो हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं को समझने और उनका सम्मान करने का अवसर प्रदान करता है। इसमें विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग एक साथ आते हैं और अपनी संस्कृति और परंपराओं को साझा करते हैं, जो हमारी एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देता है। कुंभ मेले के दौरान विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और आयोजनों का आयोजन किया जाता है, जिनमें स्नान, पूजा-अर्चना, और सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल हैं।

प्रियांशु रावत ११ कॉमर्स

यह मेला भारत की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं को समझने और उनका सम्मान करने का अवसर प्रदान करता है। यह मेला हमें अपनी संस्कृति और परंपराओं को समझने और उनका सम्मान करने का अवसर प्रदान करता है और हमें अपनी एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है। कुंभ मेले की सफलता के लिए हमारी शुभकामनाएं हैं! यह मेला हमारी संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर है, और हमें अपनी एकता और सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देने का अवसर प्रदान करता है। यह कुंभ विश्वबन्धुत्व का भी संदेश देता है। **- वान्या गैरोला ७ स**

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधना ।
तीर्थं फलति कालेन सद्य: साधुसमागम: ।।

- आचार्य चाणक्य

कल्पवास और सर्वकल्याण की त्रिवेणी महाकुम्भ...

गंगा, यमुना और गुप्त सरस्वती की पवित्र त्रिवेणी संगम है यह महाकुम्भ। महाकुंभ मेला भारतीय संस्कृति का एक अहम धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन है, जो हर बारह वर्षों में एक बार आयोजित होता है। यह मेला विशेष रूप से प्रयागराज में आयोजित किया जाता है, जहाँ लाखों श्रद्धालु गंगा, यमुना और सरस्वती नदियों के संगम पर आकर पवित्र स्नान करते हैं। महाकुंभ का महत्व धार्मिक दृष्टि से अत्यधिक है, क्योंकि इसे संपूर्ण पापों से मुक्ति पाने का अवसर माना जाता है। यह मेला सनातन धर्म के प्रमुख तीर्थों में से एक है और इसमें विभिन्न धार्मिक क्रियाएं, साधु-संतों का मिलन, और भव्य साधनाएं होती हैं। यह आयोजन केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। महाकुंभ मेला न केवल भारत, बल्कि विश्वभर से श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है। इसके आयोजन के समय में विशेष प्रकार की धार्मिक आस्था और उल्लास का वातावरण बनता है। यह कल्पवास और सर्वकल्याण की त्रिवेणी है। एक बार सभी को तीर्थराज प्रयाग जाकर महाकुम्भ में डुबकी अवश्य लगानी चाहिए।

- अद्विका शर्मा, ७ अ

कक्षा - द्वादश "सौप्रस्थानिकम्"...

२०२५ मानव भारती देहरादून आप सभी को उज्ज्वल भविष्य की मंगलमय शुभकामनाएं , आप सभी कल्याण पथ के कर्मयोगी धैर्य पथिक बनें - सम्पादक ज्योतिर्गमय

देहरादून में राष्ट्रीय खेल महोत्सव का उद्घाटन

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के करकमलों से ३८ वें राष्ट्रीय खेलों का भव्य और अनुपम शुभारंभ रायपुर देहरादून स्थित राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में हुआ। इस अवसर पर यशस्वी प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय खेलों को ग्रीन गेम्स के रूप में कराने के प्रयासों की अत्यंत प्रशंसा की। माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने राष्ट्रीय खेलों के आयोजन का अवसर देने के लिए प्रधानमंत्री को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर अनेक गणमान्य लोग, नागरिक तथा खेल जगत् से जुड़े खिलाड़ी उपस्थित हुए। यह आयोजन १६ दिनों तक नौ जिलों के ११शहरों में होगा। इसमें ३५खेलों से जुड़ी ४५ स्पर्धाओं का आयोजन होगा। यह देहरादून, पौड़ी, हरिद्वार, टिहरी, पिथौरागढ, नैनीताल, अल्मोड़ा,चंपावत, ऊधम सिंह नगर शहरों में किया जा रहा है। राज्य पक्षी मोनाल को राष्ट्रीय खेलों का शुभंकर बनाया गया है। इसे मौली नाम दिया गया है। इसका उद्देश्य युवा एथलीटों को ऊंचे लक्ष्य की ओर प्रेरित करना है।

मानव भारती के संस्थापक डॉ. डी. पी. पाण्डेय की जन्म जयन्ती पर सर्वधर्मसमभाव प्रार्थना सभा का आयोजन...

मानव भारती अपने संस्थापक डॉ. दुर्गा प्रसाद पांडेय की जयंती के उपलक्ष्य में हर वर्ष ११ फरवरी को संस्थापक दिवस मनाता है। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, महात्मा गांधी, रवींद्रनाथ टैगोर और भारत रत्न पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रेरणा से १९४१ में स्थापित यह संस्थान डॉ. पांडेय के समग्र शिक्षा के दृष्टिकोण को दर्शाता है। मानव भारती की शिक्षा समग्र शिक्षा के साथ आत्मानं विद्धि तथा वसुधैव कुटुम्बकम् के लिए कटिबद्ध है।

कार्यक्रम का शुभारंभ मानव भारती देहरादून के प्रधानाचार्य श्री अजय गुप्ता द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। साथ ही समन्वयक जेनिफर मैम, आरती मैम और डॉ. अनंतमणि त्रिवेदी ने भी इस अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित किया। विशेष सभा में समूहिक गीत प्रस्तुत किए गए, जिसमें गीता के श्लोक पाठ सहित सभी धर्मों की एकता पर प्रकाश डाला गया। छात्रों ने डॉ. पांडेय के जीवन पर आधारित नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया, जिसमें दिखाया गया कि कैसे डॉ. पांडेय ने अन्य प्रतिष्ठित नेताओं, शिक्षाविदों के साथ मिलकर मानव भारती की आधारशिला रखी।

प्री-प्राइमरी विंग के छात्रों ने भी हमारे संस्थापक को श्रद्धांजलि दी। उन्होंने विशेष सभा में एक गीत के माध्यम से सभी धर्मों के बीच एकता का प्रदर्शन किया। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और जैन व्यक्तियों की वेशभूषा में उन्होंने डीपी पांडे को उनकी जयंती पर फूल भेंट करके सम्मानित किया तथा सद्भाव धर्मनिरपेक्षता और सभी धर्मों के प्रति सम्मान का संदेश दिया। इस अवसर पर मानव भारती देहरादून के निदेशक डॉ. हिमांशु शेखर ने उनके चित्र पर पुष्पांजलि के साथ श्रद्धासुमन अर्पित किया।

मानवता के ज्ञान का प्रकाश मानव भारती, हर बच्चे के ज्ञान का स्थान मानव भारती।
सर्वधर्म समभाव का प्रतीक मानव भारती, "आत्मानं विद्धि" का उद्घोष मानव भारती।।

अतिक्ष नेगी, UKG

सोनिया, ८ अ (लघु नाटिका पुरस्कार)